Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

संगीत में निहित सौंदर्य और उसका प्रभाव

Dipesh Dhodi[1], Prof. Gaurang Bhavsar[2], Dr. Kedar Mukadam[3]

1 Research Scholar, Department of Tabla, Faculty of Performing Arts, The Maharaja Sayajirao University of Baroda, Vadodara
2 Research Guide, Department of Tabla, Faculty of Performing Arts, The Maharaja Sayajirao University of Baroda, Vadodara
3 Assistant Professor, Department of Tabla, Faculty of Performing Arts, The Maharaja Sayajirao University of Baroda, Vadodara

शोध सार

प्रस्तुत शोध लेख में शोधार्थी के द्वारा संगीत में नीहित सौंदर्य एवं उसके प्रभाव के वर्णन का प्रयास किया है। संगीत द्वारा भाव जागृत होते हैं और भावों से रस प्राप्त कर आनंदानुभूति होती है। संगीत में निहित सौंदर्य द्वारा प्रकृति एवं मानव जीवन पर होनेवाला सकारात्मक प्रभाव, जीवन में पथ प्रदर्शन का कार्य करता है। संगीत में निहित सौंदर्य की अनुभूति मानव मन पर गहरा प्रभाव डालती है, जिससे मानव आह्लाद की अनुभूति के साथ परम तत्व में ध्यानस्थ होता है। संगीत का सौंदर्य कोई आकार प्रकार का न होकर मानव द्वारा आंनद की अनुभूति एवं अभिव्यक्ति का श्रेष्ठ माध्यम है।

बीज शब्दः संगीत का सौंदर्य, संगीत का प्रभाव, सौंदर्य का प्रभाव

भूमिका

यह चराचर सृष्टि ईश्वर की अभिव्यक्ति का ही प्रतिरुप है। अभिव्यक्ति ही सृजन का मूल कारण है। ईश्वर सच्चिदानंद स्वरूप है, इसलिए उनकी बनाई प्रकृति की हर एक रचना जिसमें जड़ एवं चेतन दोनों ही प्रकारों में अद्‌भुत, अकल्पनीय एवं सौंदर्य से परिपूर्ण रचनाएं हैं। इनमें निहित सौंदर्य हमें अपनी ओर सहज ही आकर्षित करता है, जिसकी अनुभूति कर हम आंनद से सराबोर हो जाते हैं। सौंदर्य सृष्टिकर्ता के द्वारा दिया गया अनुपम उपहार है। जीवमात्र उसी का अंश होने से वह सौंदर्य की ओर सहज ही आकर्षित होता है। सुंदर वस्तु को देखकर मनुष्य उसकी ओर खींचा चला जाता है। वह अपनी सुध–बुध खो बैठता है और आनन्द की अनुभूति करता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार "कुछ रंग रूप की वस्तुएं होती हैं, जो हमारे मन में आते ही थोड़ी देर के लिए हमारी सत्ता पर अधिकार कर लेती हैं, कि उसका ज्ञान ही हवा हो जाता है और मन उन वस्तुओं के रूप में ही परिणत हो जाता है, हमारी अतःसत्ता की यही तदाकार परिणति सौंदर्य की अनुभूति है।"(1) सौंदर्य के प्रति यह आकर्षण मनुष्य को प्रत्येक कार्य में सौंदर्य निर्मिती के लिए प्रेरित करता है। मनुष्य में ईश्वर ने स्वयं अपनी सारी संभावनाएं प्रदान की हैं। मनुष्य में पांच कर्मेंद्रियां, पांच ज्ञानेन्द्रियाँ, मन, बुद्धि के साथ भावना एवं संवेदना निरूपित है। इन्हीं भावों संवेदनाओं की अभिव्यक्ति से हम एक सुंदर समाज का निर्माण कर पाते हैं। मानव को जब अपने मनोगत आवेगों, भावनाओं को प्रकट करने की इच्छा होती है तब कला का जन्म होता है।

प्रत्येक कला के उद्‌भव और विकास के मूल में सौंदर्य से उत्प्रेरित मनोगत इच्छा, भावना की अभिव्यक्ति होती है। इन सभी अभिव्यक्तियों के मूल में सुख एवं आनंद प्राप्ति की इच्छा नित्य विद्यमान रहती है। क्यूंकि प्राणीमात्र भिन्न भिन्न साधनों द्वारा आंनद की प्राप्ति के लिए ही नित्य यत्न करता है। भारतीय सौंदर्य सत्यम, शिवम् और

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

सुंदरम इन तत्वों पर आधारित है। ऐसा सौंदर्य जिसका मूल सतता (शाश्वतता) पर आधारित हो, जो कल्याणकारी हो और सुंदर हो। सौंदर्य के यही मान वास्तविक सौंदर्य की अनुभूति कराते हैं। कला आधारित सौंदर्य से भी हम आत्मतृप्ति की कामना रखते हैं। वास्तव में हमारी साहजिक मांग आनन्द प्राप्ति ही है। हमें नीरस रहना पसंद नहीं, नित्य नवीन सूख की अभिलाषा हमारे अंदर सदा विद्यमान रहती है। जीवमात्र उस सच्चिदानंद परमात्मा का अंश है इसलिए हम सदा आनंदित रहने का यत्न करते हैं। कला और सौंदर्य एक दूसरे के पूरक हैं। विभिन्न कलाओं में निहित सौंदर्य आनंददायी होता है। जीवन की नीरसता को दूर कर रस से परिपूर्ण करता है। संगीतकला बाकी कलाओं की अपेक्षा आत्मगत तृप्ति देने में अधिक प्रभावशाली सिद्ध होती है। संगीत के मूल में नादब्रह्म है। इस नाद साधना से सधे नाद बिंदु जब हमारे अंतः पर पड़ते हैं, तो सहज ही मन एवं इन्द्रियां बाह्य विषयों से हटकर अपने स्वरूप में शांत होने लगती हैं। तब यही संगीत समाधि का सुख प्रदान करता है। परंतु अधिकतर उत्श्रृंखल मानसिकता के कारण लोग विषयी सूख की प्राप्ति में ही अटक जाते हैं। अधिकतर यह देखा जाता है कि मनुष्य संगीत एवं अन्य कलाओं द्वारा मनोरंजन चाहते हैं। संगीत केवल मनोरंजन का साधन नही है। यह आत्मरंजन का साधन है, यह ईश्वर तत्व में प्रतिष्ठित करता है।

संगीतकला में सौंदर्य पूर्ण रूप से विद्यमान है। संगीत से भाव जागृत होते हैं, भाव से रस निष्पति होती है और रस निष्पति से आंनद की अनुभूति होती है। भावों को व्यक्त करने का कोई त्वरित और श्रेष्ठ माध्यम है तो वह संगीत ही है। हम अपने जीवन के हर एक पहलू पर हो रहे सुख–दुख, शोक–विशाद, आंनद के पल को अभिव्यक्त करने के लिए हम कोई न कोई सहारा ढूंढते हैं, जिससे हम अपनी खुशी, अपना दुःख एवं हमारी भीतरी भावनाओं को व्यक्त कर पाए अथवा उन भावों को इंगित कर जीवन जी सकें। अधिकतर भावों को व्यक्त करने के लिए शब्दों का सहारा लिया जाता हैं परंतु शब्दों से बनी भाषा की एक सीमा है। हम शब्दों द्वारा उन्हीं को अपने विचार एवं भाव प्रेषित कर पाएंगे जो हमारी भाषा का ज्ञान रखता हो। परंतु नाद जो सभी भाषाओं का मूल है, जिससे हम प्राणी–मात्र को अभिभावित कर सकते है। नाद बिना साहित्य के संगीत के मूल तत्वों का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि भाषा अथवा साहित्य मनुष्य के अपने ज्ञान और दृष्टिकोण पर निर्भर करता है। "पं. ओमकारनाथ ठाकुर तथा आचार्य बृहस्पति ने भी नाद के महत्व को स्वीकार करते हुए कहा है कि– भाषा की अपेक्षा नाद के प्रभाव का क्षेत्र अधिक व्यापक है। नाद– सौंदर्यजनित आनन्द का अनुभव प्रत्येक को होता है। सुख, दुःख, शोक, प्रसन्नता, करुणा आदि के अतिरिक्त आत्मतृप्ति संगीत के द्वारा होती है। तृप्तिगत प्रभाव डालने में संगीतकला सर्वोपरि मानी गई है। मूर्ति कला, चित्रकला अथवा वास्तुकला पशु पक्षियों को प्रभावित नहीं कर सकती, परंतु संगीत इसके लिए सक्षम है, जिसका आधार नाद ही तो है।"[(2)]

पं शारंगदेव ने संगीत रत्नाकर में कहा है "नादाधिनमतोजगतः" नाद के ही आधीन सारा जगत है और यही नाद जिसे प्रणव अथवा ॐकार कहते है स्वयं ब्रह्म है, जिसमें सारी सृष्टि का सृजन और लय होता है। संगीत का भी मूल स्रोत नाद है। नाद से ही संगीत का उदय हुआ है और भावों की अभिव्यक्ति करने के लिए संगीत से अधिक महत्वपूर्ण और कोई साधन नही हो सकता। संगीत भावाभिव्यक्ति प्रकट करने के लिए श्रेष्ठ साधन है। "संगीत विश्व की भाषा है; उसे कोई औपचारिक बंधन ग्राह्य नहीं। पशुओं का संगीत न समझते हुए भी हम उनकी ध्वनि के काकू भेद से अभिव्यक्ति ग्रहण करने में सफल होते हैं। इस प्रकार अपने से भिन्न राष्ट्रों का संगीत न जानते हुए भी उनके संगीत द्वारा हम सुख और दुःख की अनुभूति करने में सफल होते हैं। यही रहस्य है कि ऐसे

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

सनातन सिद्धांतो पर आधारित है, जो जीव के स्थायी संस्कारों से सदैव संबंध रहते हैं।"(3) संगीत में हमारे अंतः से जुड़े भावों को रस द्वारा अभिभावित करने की शक्ति है। सौंदर्य में आकर्षणी शक्ति है इसलिए संगीत हमें आकर्षित करता है। स्वर ताल की सुंदर ध्वनि हमारे इन्द्रिय पर पड़ते ही हम उस ओर खींचें चले जाते हैं। इसी बात को लक्ष्मीनारायण गर्ग जी ने इस प्रकार कहा है–"नश्वर स्वर तरंगे जब हमारे अंतराल में प्रविष्ट होकर सहृदय के मर्मस्थल पर आघात करती है, तो अनायास ही शरीर का रोम रोम एक अद्भुत सिहरन का अनुभव करता है। स्नायुजाल चेतना के प्रभाव से तरंगित हो उठता है, मन मादकता का अनुभव करने लगता है; यही से इन्द्रिय का स्थूल आंनद प्राप्त कर संतुष्ट होनेवाले प्राणी में वासनात्मक प्रवृत्ति जागृत होती है, सूक्ष्म आनन्द अभिलाषी ब्रह्मानन्द सहोदर रसावस्था में लय हो जाता है।"(4) इसलिए सामाजिक व्यवस्था में जीवन के हर उत्सव में, जन्म से लेकर मृत्यु तक हर प्रसंग में संगीत अभिन्नता से जुड़ा हुआ है।

मानव निर्मित सौंदर्य का आधार परमात्मा एवं प्रकृति है। इसके साथ सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश से प्रेरणा लेकर मनुष्य विभिन्न कला का निर्माण करता है। संगीत कला भी इसी सिद्धांत पर विकसित हुई है। संगीत कला के सबसे प्राचीन मुख्य दो प्रकार माने जाते हैं एक मार्गी संगीत दूसरा देशी संगीत। जैसे–जैसे काल व्यतीत होता गया, संगीत विकसित होता गया। कालांतर में संगीत के कई प्रकार विकसित हुए, जैसे शास्त्रीय संगीत, उप शास्त्रीय, लोक संगीत, सुगम संगीत, फिल्म संगीत, वाद्य संगीत। मानव अपनी रूचि संस्कार के अनुसार इन सभी प्रकारों के संगीत को ग्रहण कर आनन्द का अनुभव करता है।

मार्गी संगीत

मार्गो देशिति तद् द्वेधा तत्र मार्ग स उच्यते ।

यो मार्गितो विरिच्याद्यै प्रयुक्तो भरतादिभिः।। – संगीत रत्नाकर (१/२२)

"इस श्लोक के अनुसार 'मार्गी संगीत' वह है जिसका प्रयोग ब्रह्मा के बाद भरत ने प्रयोग किया। वह अत्यंत प्राचीन एवं कठोर सांस्कृतिक व धार्मिक नियमों से जकड़ा हुआ था, अतः आगे इसका प्रचार ही समाप्त हो गया।"(5)

इसका प्रयोग ईश्वर आराधना के लिए किया जाता था तथा इस संगीत को आध्यात्मिक प्रगति और मोक्ष प्राप्ति का मार्ग माना जाता था। इसलिए इस संगीत को मार्गी संगीत कहा गया।

देशी संगीत

देशे देशे जनानां यद् रुच्या हृदयरंजकम्।

गानं च वादनं नृत्यं तद्देशीयमिधियते ।। –संगीत विशारद(6)

जिसका प्रयोग देश के विभिन्न भागों में वहा के स्थानिक रीति रिवाजों के अनुसार जनता के मनोरंजन हेतु किया गया वह देशी संगीत कहलाया। जिसे आज हम लोकसंगीत के नाम से भी जानते हैं।

भारतीय सांस्कृतिक व्यवस्था अद्भुत और वैज्ञानिक है। भारतीय संस्कृति के सभी उत्सव एवं पर्व प्रकृति में होने वाले ऋतु परिवर्तन के साथ संबंध रखते हैं और इन ऋतुओं और उत्सवों, पर्वो के साथ लोगसंगीत का गहरा संबंध है। लोक संगीत सबसे प्राचीन संगीत है। विद्वानों ने शास्त्रीय संगीत की उत्पत्ति लोक संगीत से ही मानी

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

है। लोक संगीत प्रकृति में निहित विभिन्न नादों के उचित सन्तुलन से विकसित हुआ है, जिसमे मानव प्रकृति से जुड़े अपने भावों एवं सामाजिक सांस्कृतिक रीति रिवाजों को शब्दों में पिरोकर स्वर लय के साथ छंदोबद्ध कर नृत्य के साथ गान करता है। श्रीमती रेखा पांडेय के अनुसार – "लोक संगीत लोक की आत्मा है। लोकगीत प्रकृति का उद्गार है। जिसमें सामान्य मानव अपनी संवेदनाओं को बड़ी मधुरता और तन्मयता के साथ सहज तरीके से स्वर और लय के साथ प्रस्तुत करता है। इन गीतों में उसके सुख़ दुःख का वर्णन होता है। लोकगीत किसी व्यक्ति विशेष का न होकर पूरे समाज का दर्पण होता है, जिसमें मनुष्य आनन्द की प्राप्ति हेतु सहज ही सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश को छंदोबद्ध कर गुनगुनाता है। वहीं से लोकगीतों का स्फुरण होता है।"[(7)] हम बच्चे के जन्म की खुशी के गीत गाते हैं, लग्न विधियों में गीत गाते हैं, हमारे देश में धान की कटाई के गीत हैं, युद्धकाल में ढ़ोल, नगाड़ों, रणभेरियाँ बजाई जाती हैं, शौर्यगीत गाये जाते हैं। ऋतु परवर्तन के साथ विभिन्न उत्सवों, पर्वों वसन्त, होली, दिपावली, नवरात्र आदि पर्वों पर सभी प्रदेशों का अपना अपना लोक नृत्य एवं संगीत गाया जाता हैं। ये सभी लोक संगीत के ही विभिन्न प्रकार है। यह संगीत हर काल,परिस्थिति में भाव सम्प्रेषण का साधन बनता है।

शास्त्रीय संगीत का अपना एक शास्त्र है, नियम है उसी दायरे में रहकर संगीत की प्रस्तुति की जाती है। इस संगीत में साहित्य की प्रधानता निहित होती है। यह संगीत राग आधारित संगीत होता है इसमें मिश्रित रागों का चलन नहीं होता। रागों की शुद्धता का विशेष ध्यान रखा जाता है। यहां तकनीकी तत्वों को आधार बनाकर सौंदर्य का निर्माण किया जाता है। जिसमे आलाप, बंदिश, तान, बोलतान, मुर्की, मींड, स्वर विस्तार, खटका, मुर्च्छनाए, आदि प्रकारों का समावेश होता हैं। ये सारे तत्व शास्त्रीय संगीत में सौंदर्य उत्पन्न करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जिस प्रकार सामंजस्य, सन्तुलन, क्रमबद्धता, आदि तत्वों से कला में सौंदर्य का निर्माण होता है उसी प्रकार उपरोक्त तत्वों के सही सामंजस्य एवं सन्तुलन से शास्त्रीय संगीत में सौंदर्य का निर्माण होता है। राग आधारित संगीत का वातावरण एवं मानव मन पर गहरा प्रभाव होता है। राग दीपक वायुमंडल में अग्नि सामान ऊर्जा प्रकट कर सकता है, राग मेघ वर्षा के वातावरण का आभास कराने में सक्षम है। इसी प्रकार वर्षा ऋतु के साथ मेघ राग जुड़ा हुआ है। इस राग की स्वर रचना ही इस प्रकार की है कि आलाप करते ही वर्षा के वातावरण का आभास होने लगता है।

बैजू बांवरा, तानसेन, स्वामी हरिदास जी आदि में इस राग से वर्षा करने का सामर्थ्य था। ऐसे ही विभिन्न राग मानव मन में करुणा, विरह, आंनद, प्रेम, वात्सल्य, आदि भावों को उत्पन्न कर रस उत्सर्जित करते हैं। परंतु यह संगीत अधिक सूक्ष्मता पर अधारित होने से वे सभी वर्ग के लोग जो इस संस्कारों से दूर रहे हैं वह इस संगीत का पूर्ण रूपेण आनंद नहीं ले पाते हैं। ऐसे लोग संगीत के अन्य प्रकारों से सहज आनन्द प्राप्त करते हैं। जिसमें ठुमरी, ग़ज़ल, सुगम संगीत, फ़िल्म संगीत, भक्ति संगीत, लोक संगीत एवं वाद्य संगीत आते हैं। इन संगीत में रागों की शुद्धता एवं अन्य नियमो में थोड़ी छूट छाट होती है। साथ ही साहित्य एवं काव्य का मिश्रण होने से सामान्यजन इस संगीत को आसानी से आनंद पूर्वक ग्रहण कर सकता है।

किसी भी कला द्वारा सौंदर्य की अनुभूति तभी हो सकती है, जब कलाकार एवं ग्रहणकर्ता के मध्य सहृदयता स्थापित हो। इसलिए विभिन्न संस्कारों के कारण लोगों को संगीत के अलग–अलग प्रकारों के साथ सहृदयता

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

स्थापित होने से उन्हें तदनुसार रस अथवा आंनद की प्राप्ति होती है। इसलिए हमें कहीं ग़ज़ल प्रेमी तो कहीं ठुमरी, फिल्मी गीतों, वाद्य संगीत, को सुनते लोग दिखाई देते हैं।

संगीत का क्षेत्र बड़ा अधिक है। संगीत सभी से जुड़ा हुआ है, उसकी प्रभावकता से कोई अछूता नहीं है। संगीत का प्रयोग जहां जहां होता है वहा जीवंतता, सात्विकता, चेतनता आ जाती है। आधुनिक समय में चित्रकला का प्रदर्शन हो, प्रचार हो, स्थापत्य कला प्रदर्शन, नाट्य प्रस्तुति, फ़िल्म इन सभी प्रस्तुतियों में संगीत का प्रयोग होता है। इन प्रस्तुतियों में संगीत प्राण संचार का कार्य करता है। काव्य में भी संगीत को सहभागी बना लिया जाए तो काव्य प्रस्तुति में भी एक विशेष भावनात्मक प्रभाव निर्माण होता है।

संगीत में बड़ी शक्ति है, सबको एकत्रित करने की साथ चलने की। किसी गीत, आरती, भजन में बड़े बड़े समूहों को एक साथ ताली बजाकर गाते हुए पाया जाता है। कदम ताल में एक समय एक साथ एक ही प्रकार की क्रिया करने हेतु ड्रम आदि का साहारा लिया जाता है। इस प्रकार संगीत के प्रयोग से लोगों को आग्रह पूर्वक अनुशासित नहीं करना पड़ता। संगीत में निहित लय ताल से मन अनायास तदाकर होकर उस चाल को पकड़ लेता है। यह अकसर देखा गया है कि, एक ही प्रकार का कार्य करने वाले मजदूर कार्य करते समय किसी गीत, भजन, आदि को चलाकर सुनते सुनते कार्य करते हैं। काम करते समय संगीत के साथ मन तदाकार हो जाता है, जिसमें मन अनजाने में लय एवं स्वर के साथ तादात्म्य स्थापित कर लेता है। यह स्थिति मजदूरों को लंबे समय तक कार्य कि शक्ति प्रदान करती है और कार्य के प्रति उदासी को दूर करती है। यात्रा करते हुए भी अधिकतर लोगों को संगीत सुनते पाया जाता है। यह यात्रा की गति के साथ संगीत की गत्यात्मक एकरूपता को दर्शाता है। यात्रा करते समय प्रकृति को निहारते हुए संगीत सुनने का आनंद यात्रा को हल्का, तनावमुक्त एवं आरामदेह बनाता है। बौद्धिक कार्य से जुडे व्यक्ति बौद्धिक एवं मानसिक विश्रांति के लिए शांत प्रकृति का संगीत ग़ज़ल अथवा तो वाद्य संगीत सुनना पसंद करते हैं।

संगीत का हमारे मन मस्तिष्क एवं हृदय पर गहरा प्रभाव पड़ता है। संगीत हमारे मनोभावों को उत्तेजित करने की क्षमता रखता है। उदास एवं उत्साह विहीन मन को चंचल एवं गत्यात्मकता प्रदान करता है। श्रंगार, उत्साह रस से पूर्ण संगीत उत्तेजित कर किसी कार्य को करने हेतु उत्साह भरता है। तो कही वहीं संगीत हमारे मन मस्तिष्क में चलने वाली विचारो की दौड़ भाग को शांत कर पोषण प्रदान करता है, स्फूर्ति देता है। मानसिक तनाव को दूर करने के लिए संगीत श्रेष्ठ साधन है। संगीत के इसी प्रभाव को देखकर कई चिकित्सक अस्पतालों में रोगियों को राग आधरित संगीत सुनाते हैं। इस प्रकार संगीत से रोगी का हृदय प्रसन्न रहता है जिससे वह रोग से लड़ने की शक्ति प्राप्त करता है। वैसे संगीत सभी वर्ग के लोगों के लिए सुखदाई है। चाहे बौद्धिक कार्य से जुड़ा हो, चाहे शारीरिक मेहनत का कार्य करता हो।

इन सभी परिस्थितियों में कहीं तो संगीत रंजकता प्रदान करता है तो तो कहीं आत्म विश्रांति का आंनद प्रदान करता है। इस प्रकार संगीत हमारे हर एक भावों को पोषित कर अभिभूत करता है, हमें सहारा देता है, हमें उत्साहित करता है संगीत हास्य, प्रेम, शोक, विरह, करुणा, उत्साह, वात्सल्य हर एक भाव को अपने में समाए हुए है। प्रेमी प्रेमिका के लिए, भक्त भगवान के लिए प्रेम एवं विरह के भावों को दर्शाने वाले गीत गाए जाते हैं।

नारी सौंदर्य, प्रकृति आदि का वर्णन ठुमरी, ग़ज़ल, भजन आदि संगीत के प्रकारों में पाए जाते हैं। मन जिस समय जैसी मानसिक स्थिति में होता है, तब वह भावाभिव्यक्ति के लिए उस प्रकार का संगीत ग्रहण करता है।

निष्कर्ष

सौंदर्य ईश्वर प्रदत्त एक ऐसा गुण हैं, जो आकर्षित करता है, आनंदित करता है। सौंदर्य मनुष्य की स्वाभाविक मांग है, उसके भीतर आनंद प्राप्ति कि अभिलाषा सदैव विद्यमान रहती है। प्रत्येक कला के उद्‌भव और विकास के मूल में सौंदर्य से उत्प्रेरित मनोगत इच्छा एवं भावना की अभिव्यक्ति होती है। भावाभिव्यक्ति के लिए संगीत कला श्रेष्ठ साधन है। सौंदर्य साध्य है और कला उसे प्राप्त करने का साधन।

संगीत में निहित सौन्दर्य एवं उसका प्रभाव मानव जीवन पर पड़ता है, संगीत मानव जीवन का अभिन्न अंग है, संगीत के बिना मानव जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। संगीत द्वारा भावाभिव्यक्ती तथा आंनद की प्राप्ति होती है। संगीत को जानने वाले अथवा संगीत की बारीकियों से अनभिज्ञ लोग भी संगीत के विभिन्न प्रकारों का लाभ लेकर आनंदित होते है। भिन्न–भिन्न व्यक्तिक एवं सामाजिक परिस्थितियों में संगीत भाव संप्रेषण का आधार बनता है। संगीत का व्याप पूर्ण सृष्टि में है इसके प्रभाव से कोई अछूता नही रह सकता। संगीत का प्रयोग वातावरण में अपनी एक आभा निर्माण करता है, जिससे जीव मात्र के मस्तिष्क एवं हृदय पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। संगीत के विभिन्न प्रकार भिन्न–भिन्न परिस्थितियों में व्यक्तीक एवं सामूहिक तौर पर प्रभावित करते हैं। संगीत मानसिक शांति प्रदान करता है, जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में उदासीनता को दूर कर उत्साह भरता है। मानव जीवन में सुख दुःख, हर्ष शोक, प्रेम, विरह ऐसा कोई स्थान नहीं जहां संगीत की उपस्थिति न हो। संगीत जीवन के लौकिक क्रिया कलापों को रसपूर्ण बनाकर परम आंनद स्वरूप परब्रह्म में एकरूप करने का मार्ग प्रशस्त करता है।

संदर्भ

1 शुक्ल, रामशरण. (2004). सौंदर्य विमर्श / टंडन पुरनचंद / पृ. 23,
2 पंत, दीपक.(जून 1994). भारतीय संगीत में रसास्वादन. संगीत,जून 1994।
3 गर्ग, लक्ष्मीनारायण. (मार्च 1967). संगीत में सौंदर्य भावना. संगीत, अंक मार्च 1967
4 गर्ग, लक्ष्मीनारायण. (मार्च 1967). संगीत में सौंदर्य भावना. संगीत, अंक मार्च 1967
5 वसन्त. (2017). संगीत विशारद. गर्ग, लक्ष्मीनारायण (सं.). संगीत कार्यालय हाथरस. पृ. 222.
6 वसन्त. (2017). संगीत विशारद. गर्ग, लक्ष्मीनारायण (सं.). संगीत कार्यालय हाथरस. पृ. 223.
7 पांडेय, रेखा, (). भारतीय शास्त्रीय संगीत एवं लोक संगीत, दक्षिण कौसल टुडे (www.dakshinkosaltoday.com)

संदर्भ ग्रंथ

शुक्ल, रामशरण, (1 जनवरी, 2004), सौंदर्य विमर्श, संजय प्रकाशन
पंत, दीपक (जून 1994), भारतीय संगीत में रसास्वादन, संगीत अंक
गर्ग, लक्ष्मीनारायण ;मार्च 1967,, संगीत में सौंदर्य भावना, संगीत अंक
वसन्त. (2019). संगीत विशारद, गर्ग,लक्ष्मीनारायण(सं.). संगीत कार्यालय, हाथरस